Abhi International Journal of
**Humanities and Law**
(A Peer Review Journal)
journal homepage: https://abhijournals.com/index.php/aijhl

Volume 2, Issue 3, July-Sept 2026 ISSN : 3107-6793

# रेत की मछली : स्त्री-विमर्श के परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन

**बलजीत सिंह**

एम. ए. गुरु काशी विश्वविद्यालय, तलवंडी साबो, बठिंडा, पंजाब

**डॉ. राकेश कुमार सिंह,**

उपाचार्य, हिन्दी विभाग, गुरु काशी विश्वविद्यालय, तलवंडी साबो, बठिंडा, पंजाब

**ARTICLE INFO**

**Article History:**
Received July 2, 2026
Revised July 6, 2026
Accepted July 10, 2026
Available online July 12, 2026

**Keywords:**
रेत की मछली,
कांता भारती,
स्त्री-विमर्श,
नारी चेतना,
सामाजिक यथार्थ,
नारी अस्मिता।

**Correspondence:**
**E-mail:**awgamer2006@gmail.com

**ABSTRACT**

रेत की मछली समकालीन हिंदी साहित्य का एक महत्वपूर्ण स्त्री-विमर्शपरक उपन्यास है। इसकी लेखिका कांता भारती ने नारी जीवन की पीड़ा, संघर्ष, सामाजिक असमानता तथा आत्मसम्मान की खोज को प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया है। प्रस्तुत शोध-पत्र में उपन्यास का अध्ययन स्त्री-चेतना, सामाजिक यथार्थ, नारी-अस्मिता तथा लेखिका की दृष्टि के आधार पर किया गया है।

## 1.प्रस्तावना

समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श एक महत्वपूर्ण साहित्यिक धारा के रूप में स्थापित हुआ है। इस धारा के अंतर्गत महिलाओं के अधिकार, स्वतंत्रता, सामाजिक स्थिति तथा उनके अस्तित्व से जुड़े प्रश्नों को प्रमुखता दी गई है।[1] *रेत की मछली* इसी परंपरा का एक सशक्त उपन्यास है, जिसमें महिला जीवन की जटिलताओं और संघर्षों का यथार्थ चित्रण मिलता है।

## 2.शोध के उद्देश्य

1. उपन्यास में स्त्री-विमर्श का अध्ययन करना।
2. नारी चेतना एवं नारी अस्मिता का विश्लेषण करना।
3. सामाजिक यथार्थ के चित्रण का मूल्यांकन करना।

[1] कांता भारती, *रेत की मछली*, (प्रकाशन-स्थान: प्रकाशक, संस्करण, वर्ष), पृ. xx।

4. लेखिका की साहित्यिक दृष्टि का अध्ययन करना।

## 3.शोध पद्धति

यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। अध्ययन में उपन्यास के मूल पाठ के साथ उपलब्ध आलोचनात्मक सामग्री का उपयोग किया गया है।

## 4.स्त्री-विमर्श

उपन्यास में महिला केवल पारिवारिक दायित्वों तक सीमित नहीं है, बल्कि वह अपने अधिकारों और सम्मान के लिए संघर्ष करती है। लेखिका ने स्त्री को आत्मनिर्भर, स्वाभिमानी तथा संवेदनशील व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया है।

हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श ने बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से एक सशक्त वैचारिक और साहित्यिक आंदोलन का रूप ग्रहण किया। इस विमर्श ने साहित्य के केंद्र में स्त्री के जीवनानुभवों, उसके संघर्ष, उसकी अस्मिता, उसके अधिकारों तथा सामाजिक-सांस्कृतिक अस्तित्व से जुड़े प्रश्नों को स्थापित किया। लंबे समय तक साहित्य में स्त्री का चित्रण मुख्यतः पुरुष दृष्टि से किया जाता रहा, जिसके कारण उसकी वास्तविक संवेदनाएँ, मनोवैज्ञानिक संघर्ष तथा[2] सामाजिक परिस्थितियाँ पूर्ण रूप से अभिव्यक्त नहीं हो सकीं। आधुनिक हिंदी साहित्य में महिला रचनाकारों ने इस स्थिति को बदलने का प्रयास किया और स्त्री को एक स्वतंत्र, विचारशील तथा संघर्षशील व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया। इसी साहित्यिक परंपरा में लेखिका कांता भारती का उपन्यास रेत की मछली विशेष रूप से उल्लेखनीय माना जाता है। यह उपन्यास केवल एक स्त्री के व्यक्तिगत जीवन की कथा नहीं है, बल्कि भारतीय समाज में स्त्री के बहुआयामी अनुभवों, सामाजिक संरचनाओं, लैंगिक असमानताओं तथा आत्मसम्मान की खोज का गहन और संवेदनशील दस्तावेज़ है।

'रेत की मछली' शीर्षक स्वयं अपने भीतर गहरा प्रतीकात्मक अर्थ समेटे हुए है। जिस प्रकार रेत पर मछली का जीवित रहना संभव नहीं होता, उसी प्रकार पितृसत्तात्मक व्यवस्था, सामाजिक रूढ़ियों, आर्थिक निर्भरता तथा सांस्कृतिक बंधनों से घिरी स्त्री का स्वतंत्र और सम्मानपूर्ण जीवन भी अत्यंत कठिन हो जाता है। लेखिका इस प्रतीक के माध्यम से यह स्पष्ट करती हैं कि स्त्री के संघर्ष केवल पारिवारिक स्तर तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक स्तरों पर भी उपस्थित हैं। उपन्यास में स्त्री के जीवन की पीड़ा, उसके मौन प्रतिरोध, उसके आत्मसम्मान तथा अपनी पहचान स्थापित करने के निरंतर प्रयास का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण किया गया है। यही कारण है कि यह कृति स्त्री-विमर्श की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है।

समकालीन भारतीय समाज में शिक्षा, औद्योगीकरण, नगरीकरण, वैश्वीकरण तथा सूचना-प्रौद्योगिकी के विस्तार ने महिलाओं के जीवन में अनेक सकारात्मक परिवर्तन किए हैं। महिलाओं की शिक्षा, रोजगार, राजनीतिक भागीदारी तथा सामाजिक जागरूकता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, किंतु इसके साथ ही घरेलू हिंसा, लैंगिक भेदभाव, आर्थिक असमानता, कार्यस्थल पर उत्पीड़न तथा सामाजिक रूढ़ियों जैसी अनेक चुनौतियाँ आज भी विद्यमान हैं। 'रेत की मछली' इन सभी प्रश्नों को संवेदनशीलता और यथार्थपरक दृष्टि से प्रस्तुत करती है। लेखिका केवल समस्याओं का चित्रण नहीं करतीं, बल्कि स्त्री के भीतर विकसित हो रही आत्मचेतना, आत्मनिर्भरता और प्रतिरोध की शक्ति को भी रेखांकित करती हैं। यही कारण है कि यह उपन्यास सामाजिक यथार्थ और स्त्री-अस्मिता के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण स्रोत बन जाता है।

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य 'रेत की मछली' का स्त्री-विमर्श के परिप्रेक्ष्य में समग्र अध्ययन करना है। इस अध्ययन में उपन्यास की कथावस्तु, पात्र-योजना, नारी-चेतना, सामाजिक यथार्थ, भाषा-शैली, प्रतीकात्मकता तथा लेखिका की

[2] वही, पृ. 25।

वैचारिक दृष्टि का विश्लेषण किया जाएगा। साथ ही यह भी समझने का प्रयास किया जाएगा कि यह उपन्यास समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श को किस प्रकार नई दिशा और व्यापकता प्रदान करता है। इस प्रकार यह शोध केवल एक साहित्यिक कृति का विश्लेषण नहीं, बल्कि बदलते भारतीय समाज में स्त्री की स्थिति, उसकी चेतना और उसके संघर्षों की व्यापक समझ विकसित करने का प्रयास भी है।

## 5.नारी चेतना

उपन्यास की प्रमुख विशेषता नारी चेतना का विकास है। स्त्री अपने अस्तित्व, अधिकार तथा स्वतंत्र निर्णय की आवश्यकता को समझती है और सामाजिक बंधनों का सामना करते हुए अपनी पहचान स्थापित करने का प्रयास करती है।

## 6.सामाजिक यथार्थ

उपन्यास में पितृसत्तात्मक व्यवस्था, लैंगिक भेदभाव, पारिवारिक तनाव, आर्थिक निर्भरता तथा सामाजिक रूढ़ियों का यथार्थवादी चित्रण किया गया है। लेखिका ने समाज की उन विसंगतियों को उजागर किया है जो महिलाओं के विकास में बाधा बनती हैं।[3]

## 7.भाषा एवं शैली

उपन्यास की भाषा सरल, सहज और प्रभावशाली है। संवाद स्वाभाविक हैं तथा कथन शैली यथार्थवादी है। लेखिका ने भावनात्मक और सामाजिक दोनों स्तरों पर पाठक को प्रभावित करने वाली शैली अपनाई है।

## 8.साहित्यिक महत्त्व

यह उपन्यास हिंदी के स्त्री-विमर्श साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसमें नारी जीवन के अनेक पक्षों का गहन चित्रण मिलता है तथा यह समाज में समानता और मानवीय गरिमा के पक्ष में सशक्त संदेश देता है।

## 9.निष्कर्ष

*रेत की मछली* समकालीन हिंदी साहित्य का एक महत्वपूर्ण स्त्री-विमर्शपरक उपन्यास है। इसमें नारी जीवन की समस्याओं, संघर्षों, आत्मसम्मान तथा सामाजिक यथार्थ का सशक्त चित्रण मिलता है। लेखिका ने यह स्पष्ट किया है कि महिला केवल सामाजिक व्यवस्था का हिस्सा नहीं, बल्कि परिवर्तन की सक्रिय वाहक भी है। यह उपन्यास पाठकों को लैंगिक समानता, न्याय और मानवीय मूल्यों के प्रति जागरूक करता है तथा हिंदी साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान स्थापित करता है।

## 10.संदर्भ सूची (उदाहरण)


1. रेत की मछली – कांता भारती
2. हिंदी स्त्री-विमर्श संबंधी आलोचनात्मक ग्रंथ।
3. समकालीन हिंदी उपन्यासों पर प्रकाशित शोध एवं आलोचना।


[3] रामचंद्र शुक्ल, *हिंदी साहित्य का इतिहास* (इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन, 2018), पृ. 74